1 अप्रैल 2020

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

E-mail: news.shantikunj@gmail.com RNI-NO.38653/ 80

ई-संस्करण नि:शुल्क वितरण

इन दिनों फैली कोरोनावायरस की महामारी के कारण पूरे देश में लॉकडाउन की स्थिति है। ऐसे में प्रज्ञा अभियान को नियमित क्रम में प्रकाशित कर पाठकों तक पहुँचाना संभव नहीं हो पा रहा है। अतः जब तक पुनः परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं हो जातीं, ई-संस्करण के माध्यम से ही सामयिक प्रेरणा, सूचना और समाचारों को पाठकों तक पहुँचाने का निर्णय लिया गया है। **पाठकों से निवेदन है कि सोशल मीडिया के माध्यम से इसे हर व्यक्ति तक पहुँचाने का प्रयास करें।**

आध्यात्मिक जीवन शैली के प्रति आस्था और भारत के उज्ज्वल भविष्य के प्रति विश्वास बढ़ाती

भविष्यवाणियाँ जो इन दिनों चरितार्थ होती दिखाई दे रही हैं



परम पूज्य गुरुदेव ने समय-समय पर अखण्ड ज्योति पत्रिका में ऐसे अनेक विश्व प्रसिद्ध भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियाँ प्रकाशित की हैं, जो पहले कल्पनातीत और असंभव-सी प्रतीत होती थीं किन्तु लोगों ने उन्हें चरितार्थ होते देखा। इनके प्रकाशन का उद्देश्य मानवमात्र को सचेत करते हुए सही और सार्थक दिशा में कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित करना रहा है।

इन दिनों कोरोनावायरस 'कोविड-19' का वैश्विक संकट छाया है। इसका संकेत भी इन भविष्यवाणियों में मिलता है। यह भी स्पष्ट है कि भारत का भविष्य उज्ज्वल है, भारत सारे विश्व का मार्गदर्शन करेगा, लेकिन इसके लिए प्रतिगामिता का मार्ग छोड़कर समझदारी, सच्चाई और अच्छाई को अपनाना ही होगा। जो समय रहते चेत जाएँगे, वे ईश्वर के अनुग्रह के पात्र होगें, श्रेय-सौभाग्य पायेंगे। जो नहीं समझ पायेंगे वे पछताएँगे।

अविश्वसनीय कथन सच हुए

"पूँजीवाद तथा साम्यवाद एक कमरे में कैसे रह सकते हैं? इटली में वह शक्ति कहाँ जो वह विश्व युद्ध में भाग ले? मुसोलिनी का उदय एक अपराजेय शक्ति के रूप में हुआ है। उसका पतन असम्भव है। विश्व-संस्था का निर्माण एक असंगत कल्पना है, जिसकी स्थापना कभी भी संभव नहीं।" एक पत्रकार ने दृढ़ शब्दों में इटली के सुप्रसिद्ध भविष्यवक्ता **फादरपियो** का प्रतिवाद किया। पियो का कथन था-

"द्वितीय विश्व युद्ध की अनेक विचित्रताओं में अमेरिका और रूस दोनों का एक साथ मित्र सेना के रूप में युद्ध में भाग लेना भी सम्मिलित है। इस युद्ध में इटली को भी भाग लेना पड़ेगा और भाग ही नहीं, युद्ध समाप्ति की पहल भी वही करेगा। तब तक मुसोलिनी का पतन हो चुका होगा और एक बार इटली को भयंकर मुद्रास्फीति, मँहगाई तथा देशव्यापी संकटों का सामना करना पड़ेगा। इस विश्व युद्ध का आखिरी चरण इतना भयंकर होगा कि दुनियाँ के सभी शीर्ष राजनीतिज्ञ यह सोचने को विवश होंगें कि युद्ध समस्याओं का अन्तिम हल नहीं है। वार्ताओं से भी समस्याएँ सुलझाई जा सकती हैं, इसी भावना से प्रेरित होकर एक विश्व संस्था का निर्माण होगा, किन्तु राजनीतिक अखाड़ेबाजी के अतिरिक्त होगा और कुछ भी नहीं।..."

जब इन पत्रकार महाशय ने फादरपियो से उनकी भविष्यवाणियों की सम्भावनाओं पर आशंका व्यक्त की थी, तब तक फादरपियो की अधिक ख्याति नहीं थी, किन्तु जब उसी पत्रकार द्वारा सर्वप्रथम प्रकाशित फादरपियो की भविष्यवाणियाँ लोगों ने पढ़ीं, जो एक-एक कर सच होती गईं तो एकाएक उनके नाम की इटली में धूम मच गई।

फादरपियो की आध्यात्मिक आस्था

परम पूज्य गुरुदेव ने अपने आलेख में लिखा है-इटली के एक गिरजाघर में पादरी श्री पियो अत्यन्त विनम्र स्वभाव, मधुरवाणी और विनोद प्रिय स्वभाव के हैं। परमात्मा पर उनकी अनन्य आस्था है। अपनी निश्चितन्तता का आधार भी वह इसी आस्था को मानते हैं। उनका कहना है कि जब परमात्मा को अपनी हर सन्तान के हित की चिन्ता आप है तो मनुष्य व्यर्थ की कल्पनाओं में क्यों डूब मरे? यदि कभी किसी ने उनकी बात का प्रतिवाद किया तो वे आत्मविश्वासपूर्वक कहते हैं, "परमात्मा की शक्ति सर्वोपरि है। वह क्या करेंगे, यह कोई नहीं जानता। पर कभी-कभी मुझे अपने भीतर उन्हीं का प्रकाश झाँकता और प्रेरणाएँ प्रस्फुटित करता दिख जाता है। उस समय मेरे चित्त की स्थिति दुविधाजनक नहीं होती, इसी से अपने कथन की सत्यता पर मुझे असीम विश्वास रहता है।

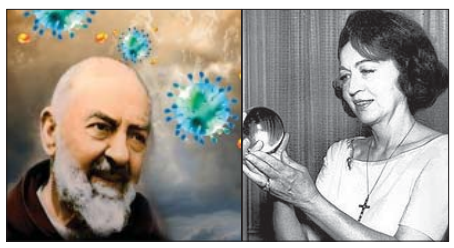
लोग अक्सर उनसे पूछते-परमात्मा नैतिक शक्तियों का केन्द्र और अध्येता है। आज समाज में अनैतिकता का, अधर्म का साम्राज्य बढ़ रहा है। पहले शिक्षित व्यक्तियों की प्रामाणिकता असंदिग्ध मानी जाती थी, किन्तु अब स्थिति उलट गई है। शिक्षा का अर्थ चालाकी अर्थात् धोखेबाजी प्रतीत होता है। इससे स्थिति और भी भयानक हो गई है। क्या आप बता सकते हैं कि परमात्मा इस स्थिति में भी कभी परिवर्तन लाएगा? यदि हाँ तो किस तरह?

भविष्य भारत का उज्ज्वल है

फादरपियो ने आशा भरे स्वर में कहा-लोहे को लोहा काटता है, लोगों की बुद्धि में जो अपवित्रता समा गई है, उसे काटने के लिए भारतवर्ष में एक अत्यन्त प्रबुद्ध सत्ता का अवतरण हो चुका है। उसकी प्रमुख विशेषता यह होगी कि वह अध्यात्म तत्त्व के बारे में जितना अधिक जानकार, सिद्ध व समर्थ होगा, उतना ही अधिक वह विज्ञान का भी पण्डित होगा। वह शरीर शास्त्र, जीवशास्त्र, रसायन विज्ञान, भौतिकी, अनुवांशिकी आदि विद्याओं का अध्यात्म में समावेश कर एक नए दर्शन का प्रतिपादन करेगा। उसका हर प्रतिपादन व्यक्ति की आत्मिक पवित्रता, आचारण की पुनीतता के लिए होगा। यह शक्ति अपने सहयोगियों के साथ भारत में प्रकटेगी, पर प्रभावित वह पूरी दुनियाँ के हर धर्म, हर क्षेत्र को करेगी। यही नहीं, उसी के युग में भारतवर्ष का विश्व की सर्वोपरि सत्ता के रूप में उदय होगा और चिरकाल तक वह संसार को हर क्षेत्र में मार्गदर्शन प्रदान करेगा।"

वर्तमान संदर्भ में

उनकी आगे की अनेक भविष्यवाणियों में कुछ प्रमुख इस तरह हैं-अरबों और इज़राइल के बीच बराबर टक्कर होती रहेगी, अरब अपनी फूट



फादरपियो और जीन डिक्सन

दो विश्वविख्यात भविष्य वक्ता,
जिनकी भविष्यवाणियों में मिलते हैं वर्तमान
कोरोनावायरस की महामारी के संकेत

के कारण कभी भी उसका कुछ बिगाड़ न सकेंगे। इज़राइल निरन्तर शक्तिशाली होता चला जाएगा।

रूस और अरबों में जोरदार टक्कर होगी, जिसमें तटस्थ रहने के कारण पाकिस्तान मुस्लिम समुदाय देशों में असम्मानित होगा, किन्तु चीन इस युद्ध में अरबों का साथ देगा।

चीन युद्ध में विषैले कीटाणुओं का प्रयोग करेगा, जिससे एक बार संसार में भीषण स्थिति आ जाएगी। उस समय भी भारतवर्ष पर्यावरण और बीमारियों से बचा रहेगा, यह आश्चर्यजनक बात होगी।

आज भी वे सामयिक भविष्यवाणियाँ करते रहते हैं। वे प्रायः सब सच निकली हैं। इसी कारण लोगों को यह जानने की अभिरुचि रहती है कि जिसका उन्होंने संकेत किया है, वह शक्ति कब प्रकाश में आती है?

(वाङ्मय 'युग परिवर्तन कैसे? और कब? पृष्ठ 8.31 से संकलित, सम्पादित)

जीन डिक्सन ने चीन से चेताया

परम पूज्य गुरुदेव ने अपने आलेखों में अनेक ऐसे विश्वविख्यात भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियों का उल्लेख किया है, जिन्हें सारे विश्व ने चरितार्थ होते देखा है। इन्ही में से एक श्रीमती जीन डिक्सन की एक भविष्यवाणी को वर्तमान समय में कोरोनावायरस से फैलने वाली वैश्विक महामारी के रूप में सच होते देखा जा रहा है। वाङ्मय 'युग परिवर्तन कैसे? और कब? के पृष्ठ 8.6 पर इसका उल्लेख इस प्रकार किया गया है-

"अगले युद्ध में चीन शस्त्र-युद्ध की अपेक्षा कीटाणु-युद्ध में विश्वास रखेगा तथा इसमें असंख्य प्राणियों की मृत्यु हो जाएगी। चीन के विरुद्ध रूस अमेरिका एक होकर लड़ेंगे।"

कैसे होता है भविष्य दर्शन

महात्मा आइन्स्टीन ने समय की परिभाषा करते हुए कहा है कि यह घटनाओं के सापेक्ष माप की प्रतीति मात्र है, अन्यथा समय नाम की कोई वस्तु नहीं है, जबकि इतिहास समय के बिना लिखे ही नहीं जा सकते। तब फिर यह कहना ग़लत न होगा कि कोई एक बिन्दु, एक शक्ति, एक स्फुरणा सृष्टि में कहीं ऐसी है जो समय का, अर्थात् घटनाओं का मूल कारण है। वही महा इतिहास है। भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों ही उस केन्द्र बिन्दु पर एकाकार हैं। सामान्य मनुष्य थोड़े समय के लिए भी यदि उस महाशक्ति परमात्मा के साथ चित्तलय करता है तो उस क्षणिक अनुभूति से विराट् भविष्य के दर्शन नितान्त सम्भाव्य हैं।

हेराल्ड शरमन द्वारा भविष्य दर्शन

हेराल्ड शरमन की भविष्यवाणियों का उल्लेख वाङ्मय खण्ड 27 के पृष्ठ 8.28 पर किया गया है। उनकी विशेषता यह है कि उन्होंने विनाश के बाद सृजन की सुखद संभावनाओं का भी वर्णन किया है। उनके द्वारा की गई भविष्यवाणियों में अध्यात्म के प्रति जनमानस के झुकाव के स्पष्ट संकेत मिलते हैं। वे लिखते हैं-

- बीसवीं सदी के अन्तिम दशक में पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र में अभिनव बदलाव आएगा, जिससे विनाश विकास का रूप ले लेगा। लोग नैतिकता और मानवोचित गुण स्वयंमेव धारण करेंगे।
- धर्म व विज्ञान के बीच की दूरी घटेगी। विज्ञान साधन बनेगा, तो धर्म साध्य बनकर उसे दिशा-निर्देश देगा।
- वर्तमान में चारों ओर छाया हुआ भौतिकवाद धीरे-धीरे अध्यात्मवाद की ओर उन्मुख होगा। लोग सहकारी जीवन एवं परमार्थपरायणता में सुख अनुभव करेंगे।
- वैचारिक दृष्टि से मनुष्य एक नए आयाम में प्रवेश करेगा, उनके अन्तराल में उच्च श्रेणी की भाव-संवेदनाएँ हिलोरें ले रही होंगी। यही पीढ़ी अपने चरित्र एवं प्रखर प्राण चेतना से अशान्ति के वातावरण में स्थिरता एवं शान्ति लाएगी।
- अवचेतन एवं गहन मनोविज्ञान का प्रयोग सामूहिक विचार परिवर्तन के लिए होगा, जो विशुद्ध रूप से नई पीढ़ी को सुसंस्कारी बनाने की ही एक अभिनव प्रक्रिया होगी। समष्टिगत चेतना बड़ी तेजी से विकसित होगी।
- सम्पूर्ण विश्व में युवकों के नैतिक एवं सामाजिक उत्थान एवं उनके चिन्तन, चरित्र में उत्कृष्टता लाने व जिम्मेदारी सौंपने के लिए प्रयास किए जायेंगे।
- अधिकांश देश छोटे-छोटे उद्योगों में पूँजी लगाएँगे। वैज्ञानिक खोजों का सीधा लाभ छोटे तबकों को मिलेगा, तीसरी दुनिया के देश तेजी से आगे बढ़ेंगे।
- बड़े-बड़े शहरों का विकेन्द्रीकरण होगा, लोग अनायास ही छोटे कस्बों की ओर कदम बढ़ाएँगे।

पढ़ने में तो लगता है कि ये असम्भव प्रतीत होने वाले परिवर्तन देखते-देखते कैसे सम्भव हो सकेंगे, किन्तु तथ्य भली-भाँति याद रखना चाहिए कि मनीषियों की अन्तःस्फुरणा के आधार पर व्यक्त उनके उद्गार निश्चित ही सत्य होकर रहते हैं। महाकाल की चाल के आगे किसी की क्या बिसात है?

समय ने यह समझा दिया कि अपना अस्तित्व और स्वास्थ्य सर्वोपरि है

इनकी रक्षा, संयम, संवेदना और सहकार से ही संभव होती है

संकट से मिली सीख

समस्या : मनुष्य विश्व का सबसे अधिक विचारशील, भाव सम्पन्न और श्रेष्ठ प्राणी माना जाता है। लेकिन विवेक बुद्धि से देखा-परखा जाये तो मनुष्य जैसा मूर्खता, संवेदनहीनता, संकीर्णता बरतने वाला प्राणी भी खोजना कठिन है। युगऋषि, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने अपनी पुस्तक ''समझदारों की नासमझी'' में इस तथ्य को अनेक उदाहरणों से स्पष्ट किया है। संक्षेप में कुछ बिन्दु देखें-

• प्रकृति के अनुशासन में चलने वाले सभी प्राणी लगभग निरोग जीवन जीते हैं। केवल मनुष्य ने अपने और अपने निकट सम्पर्क में रहने वाले प्राणियों के लिए तरह-तरह के रोग पैदा कर लिए हैं।

• सभी प्राणी अपने पेट और प्रजनन की आवश्यकताएँ पूरी करते हुए परस्पर संतुलन बिठाते हुए चलते हैं। केवल मनुष्य ही अपनी अनगढ़ इच्छाओं की पूर्ति के लिए तरह-तरह के अपराध, युद्ध और कलह-प्रसंगों को पैदा करता रहता है।

मनुष्य की इन्हीं अनगढ़ प्रवृत्तियों ने अनेक जीवों और वनस्पतियों की प्रजातियाँ ही समाप्त कर दी हैं। धरती पर जल-जंगल-जमीन का संतुलन बिगाड़ दिया है। अपनी सुरक्षा और समृद्धि के हवाले देते हुए घातक हथियारों और भूमि, जल, वायु के प्रदूषण से धरती के जीवमात्र के अस्तित्व को संकट में डाल दिया है।

• विशेषज्ञों ने बहुत समझाया कि अपनी हविश और उन्मत्तता को सँभालो। आसन्न संकटों पर भी प्रकाश डाला, किन्तु मनुष्य अपनी अनगढ़ता से बाज नहीं आया।

उपचार : ऐसी स्थित में प्रकृति को कुछ कड़े कदम उठाने पड़ जाते हैं। पू. गुरुदेव ने इस संदर्भ में लिखा है:-

''जहाँ ज्ञान को, विवेक को, तर्क को, औचित्य को सफलता नहीं मिलती, वहाँ दण्ड प्रहारों की करारी चोटें थोड़े ही समय में सब कुछ ठीक कर देती हैं। मनुष्य की चिर संचित दुर्बुद्धि और हठवादिता बदली जानी आवश्यक है। इसी प्रयोजन के लिए ताण्डव नृत्य का सरंजाम जुटाना पड़ रहा है। दुष्टता के समर्थन में दुराग्रह करने वाले इन मोहान्ध लोगों की कुचेष्टा ही वह विभीषिका है, जिसके लिए दैवी और मानवी विग्रह विभिन्न रूपों में उत्पन्न होकर इस पुण्य धरित्री को रक्त रंजित करेंगे।''

(वाङ्मय क्र. 29, पृष्ठ 1.49)

मनुष्य की सामान्य बुद्धि और आदतों में तो समझदार व्यक्तियों के समझाने से, स्नेह-आग्रह से धीरे-धीरे परिवर्तन आ जाता है, लेकिन दुबुद्धि और हठवादिता तो रावण, कंस और दुर्योधन की तरह अपनी जिद नहीं छोड़ेगी, उन्हें तो सेर पर सवा सेर की उक्ति ही कारगर सिद्ध होती है। सामान्य क्रम में जब अशिव कर्म चुपचाप किए जाते हैं, तब शिव तत्त्व भी शालीन प्रयोग ही करता है। लेकिन जब अशिव खुलेआम निर्लज्ज निर्भीक होकर नाचते हैं तो शिव भी ताण्डव मुद्रा में अवतरित होकर उनका उपचार करता है। शिव ताण्डव की प्रक्रिया ऐसी लाचारी में ही लागू करती है।

प्रकृति ने लाचारी में एक बड़ा कदम उठा लिया है। संभावित ख़तरों को विवेकपूर्वक न समझने वालों को कोरोना के प्रत्यक्ष संकट का अहसास करा दिया है। अपनी संकीर्ण सुविधाओं और अनगढ़ महत्त्वाकांक्षाओं को अनिवार्य मानने वालों को एक झटके में यह भान करा दिया है कि उन सब की अपेक्षा मनुष्य और मुनष्यता का अस्तित्व अधिक महत्त्व रखता है। धन की अंधी दौड़ अचानक थम गई। मनोरंजन के नाम पर चलने वाली तमाम कुचेष्टाएँ शान्त हो गईं। अपने और अपने परिवार के वास्तविक हितों के बारे में सोचने का अवसर मिल गया। उपेक्षित परिजनों और पड़ौसियों के स्नेह सूत्र पुनः उभरने लगे। अनुशासन पालने और संयम में रहने की प्रतिबद्धता फिर जाग उठी। अहमन्यता के नीचे दबी स्वाभाविक मानवी संवेदनाओं को पुनः उभरने का अवसर मिल गया। दूसरों के शोषण से अपनी सम्पन्नता बढ़ाने की वृत्ति पर लगाम लगी और असमर्थों के पोषण और संरक्षण के लिए अपनी क्षमता और सम्पन्नता लगा देने की गौरवमय गतिविधियाँ चल पड़ीं।

सीखें-समझें : प्रकृति ने यह सब एक प्रत्यक्ष संकट का बोध कराकर थोड़े से समय में ही कर दिया। इसके लिए मानवीय आस्थाओं को उसके प्रति कृतज्ञता अनुभव और प्रकट करनी चाहिए।

प्रकृति के क्रिया-कलाप भी किसी समर्थ और समझदार अभिभावक जैसे ही होते हैं। अभिभावक अपने बच्चों को खुश रखने के लिए पूरे मनोयोग से लगे रहते हैं। समय पर आहार, विहार, विश्राम, वस्त्र, मनोरंजन आदि व्यवस्था बनाते रहते हैं। बच्चे अपना हित भूल जायें तो भी वे उन्हें समझाकर, फुसलाकर उन्हें जगाते, सुलाते, खिलाते, पहनाते रहते हैं। लेकिन वही बच्चे जब अपने हित भुलाकर अनगढ़, अहितकर प्रवृत्तियों में रस लेने लगते हैं तो वही प्रिय अभिभावक उन पर प्रतिबन्ध लगाने लगते हैं। यदि समझाने, फुसलाने जैसी सौम्य क्रियाओं का प्रभाव नहीं दिखता तो वे क्रोध प्रकट करते और प्रताड़ना का सरंजाम बनाते हैं। लेकिन इन सबके पीछे उनका उद्देश्य बच्चों को सही राह पर लाना ही होता है। बच्चे समझ जायें तो उठे हुए थप्पड़ या डण्डे रुक या हलके पड़ जाते हैं। बच्चों के मार्ग पर आते ही, फिर वही चिर परिचित स्नेह, सौजन्य प्रकट होने लगता है।

सामाजिक दिशा

कोरोना जनित प्रत्यक्ष संकट ने मनुष्य की चेतना को झकझोर कर जगा दिया है। लगभग सभी लोग संयम, अनुशासन, संवेदना एवं सहयोग के प्रति जागरूक और तत्पर होने लगे हैं। यदि मनुष्य समाज अपने मनुष्योचित विवेक और सद्भाव का उपयोग पुनः ठीक से करने लगे तो यह संकट अधिक दिनों टिकने वाला नहीं है। मनुष्य का जाग्रत् विवेक और पुरुषार्थ अपने ढंग से इसका उपचार खोज लेगा। अभिभावक प्रकृति भी अपना मूल उद्देश्य सधता देखकर अपने प्रताड़ना के प्रहार को समेटने लगेगी।

प्रसन्नता की बात है कि तमाम कठिनाइयों के होते हुए भी, आर्थिक आय के तमाम साधन रुद्ध हो जाने पर भी अधिकांश अमीर, गरीब, प्रबुद्ध, अशिक्षित सभी एकमत, एकजुट हो रहे हैं। कठिनाइयों को सहते हुए भी अपने विवेकसंगत कर्त्तव्य पूरे करने के प्रयास कर रहे हैं। जनता प्रशासनिक अनुशासनों को स्वीकार कर रही है, प्रशासन जनता की कठिनाइयों को हल करने के लिए यथाशक्ति प्रयास कर रहा है। धन सम्पन्न लोग अपनी सम्पन्नता का मोह छोड़कर तथा श्रम सम्पन्न अपने श्रम की सार्थकता के लिए धैर्यपूर्वक प्रयास कर रहे हैं।

इन सबके सुसंयोग से करोना का उपचार अनुमानित समय में हो जाना कठिन नहीं है। किन्तु पुनः कोई ऐसी विभीषिका सर पर न आ टूटे, इसके लिए जिन मानवीय मूल्यों को विवेकपूर्वक समझने और प्रयासपूर्वक क्रियान्वित करने के जो सत्प्रयास फिलहाल चल पड़े हैं, उन्हें स्थायी रूप देना होगा। अन्यथा मनुष्यता के हित साधने के लिए प्रकृति को पुनः कुछ कड़े कदम उठाने पड़ सकते हैं।

विचारकों का कथन है कि –

''संकट से मिली सीख को ढंग से अपना लिया जाय तो आगे आने वाले संकटों को निरस्त किया जा सकता है।''

मनुष्य पूर्ण नहीं, प्रयोगवादी है। प्रयोगों में चूकें होती हैं और प्रयोगकर्त्ता उन्हें ठीक करता हुआ सफलता की तरफ बढ़ता रहता है। इसीलिए युगऋषि ने लिखा है-

''भूल होना इतना बुरा नहीं है, जितना भूलों को स्वीकार करने और उनमें सुधार करने से कतराना।''

मनुष्य अपनी सफलताओं के नशे में प्रकृति के नियमों की अनदेखी करने लगा था। इसलिए संयम, संवेदना और सहकार के स्थान पर मनमौजीपन, हृदयहीनता तथा अहंकार जैसी दुष्प्रवृत्तियाँ पनप रही थीं। अब संकट की घड़ी में संयम, संवेदना तथा सहकार का महत्त्व समझ में आ रहा है तो उसे नित्यप्रति के सहज जीवन में क्रम में स्थान देने के ठोस प्रयास भी किए जाने चाहिए। इसके लिए जीवन साधना का क्रम सभी लोग अपनाये रखें, यह आवश्यक है।

प्रकृति या समाज के साथ आदर्श तालमेल की बात फिलहाल न भी करें तो न्यूनतम स्तर पर संतुलन बिठाना तो ज़रूरी है ही। इसके लिए युगऋषि ने एक सर्वसुलभ साधनात्मक सूत्र दिया है।

''व्यक्तिगत स्वार्थ एवं सुख को सामूहिक स्वार्थ एवं सामूहिक हित से अधिक महत्त्व न दें।''

स्पष्ट है कि किसी को सुख-सुविधाएँ और आवश्यक स्वार्थ छोड़ने के लिए नहीं कहा जा रहा है। केवल यह अपेक्षा की जा रही है कि उनके नशे में सामूहिक हितों की उपेक्षा न की जाय। क्योंकि सामूहिक हितों से ही हमारे व्यक्तिगत हितों को स्थायित्व मिलाता है।

स्वार्थ एकदम ही त्यागने जैसी वृत्ति नहीं है। यदि कोई दूसरों को स्वस्थ बनाना चाहता है तो उसे स्वयं को स्वस्थ रखना ही पड़ेगा। यदि कोई लोगों को विद्वान बनाना चाहता है तो उसे स्वयं विद्वान बनना ही पड़ेगा। अपना अस्तित्व बनाए रखने का अधिकार प्रकृति और परमेश्वर ने सभी को दिया है। इस हेतु संतुलित स्वार्थ तो मनुष्य के अस्तित्व के लिए भी आवश्यक है। स्वार्थ जब संकीर्णता, हठवादिता अपना लेता है तब वह आसुरी प्रवृत्तियों को पनपाने लगता है।

इसलिए अपने स्वार्थ को इस मर्यादा में रखने की ज़रूरत है जो सामूहिक हितों का हनन न करे। उनमें बाधा पैदा न करे। सुख मिले तो अच्छी बात है, लेकिन यदि उसे नियंत्रित न रखा जाय तो वह दूसरों के क्या, अपने स्वयं के हितों के भी विपरीत हो जाता है। इसलिए क्या व्यक्तिगत हित और क्या सामाजिक हित दोनों के लिए ही स्वार्थों और सुखों के लिए मन के आग्रह को नियंत्रित, अनुशासित, मर्यादित रखना ज़रूरी हो जाता है। इतनी थोड़ी-सी सावधानी और तत्परता सभी बरतने लगे तो तमाम संभावित संकटों से बचने, बचाने की मज़बूत पृष्ठभूमि बन सकती है।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी की प्रधानमंत्री जी के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंस

- देश भर में चल रहे आपदा राहत कार्यों की जानकारी दी।
- कहा-आवश्यकता हो तो शान्तिकुञ्ज, देव संस्कृति विश्वविद्यालय सहित देश के प्रज्ञा संस्थानों को जनसंपर्क रोधी केन्द्र (क्वारंटाइन सेंटर) के रूप में प्रयोग किए जा सकते हैं।

प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 30 मार्च को देश के 16 धार्मिक संगठनों के प्रमुखों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग की। अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी भी इसमें आमंत्रित थे। उन्होंने लगभग 10 मिनट में माननीय प्रधानमंत्री जी को गायत्री परिवार द्वारा कोरोना वायरस के संकट के समय पूरे देश में चलाए जा रहे राहत और बचाव कार्यों की जानकारी दी।

श्रद्धेय डॉ. साहब ने देश के हर जिले में आपदा प्रबंधन वाहिनियाँ सक्रिय होने की जानकारी प्रधानमंत्री जी को दी। उन्होंने कहा कि आवश्यकता पड़ने पर देश के 5000 शक्तिपीठ-प्रज्ञा संस्थानों और शान्तिकुञ्ज-देव संस्कृति विश्वविद्यालय को कोरोना वायरस के संदिग्ध लोगों को जनसंपर्क रोधी केन्द्र (क्वारेंटाइन) के रूप में विकसित एवं प्रयुक्त किये जा सकते हैं। हरिद्वार प्रशासन के साथ मिलकर चलाई जा रही सेवाओं से उन्हें अवगत कराया।

श्रद्धेय डॉक्टर साहब ने बताया कि गायत्री परिवार लोगों को कोरोना वायरस से बचने के वैज्ञानिक तौर-तरीके बता रहा है। उन्होंने कहा कि गायत्री परिवार द्वारा पिछले दो वर्षों से चलाए जा रहे गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ-उपासना अभियान तथा प्राणायाम के माध्यम से लोगों की जीवन शक्ति बढ़ाने के बृहद् स्तर पर प्रयास किए गए हैं, जिनका लाभ करोड़ों लोगों को मिला है।



श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी प्रधानमंत्री जी के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग करते हुए

इस वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के भैयाजी जोशी, आर्ट ऑफ लिविंग के श्री श्रीरविशंकर जी, पतंजलि योगपीठ के स्वामी रामदेव, जग्गी वासुदेवा, रामकृष्ण मिशन के प्रमुख प्रतिनिधि आदि प्रतिष्ठित गणमान्य शामिल थे।

मैं लोगों से कहता हूँ कि लम्बी-लम्बी साधना करने की उतनी जरूरत नहीं है। इस छोटे-से गायत्री मंत्र का जप करके देखो। यह मंत्र छोटा है, पर इसकी शक्ति भारी है। – रामकृष्ण परमहंस

देशरत्न डॉ. अम्बेडकर के जन्म दिवस (14 अप्रैल) पर विशेष

डॉ. साहब के दलित आन्दोलन से जुड़े सज्जन चेतें, वर्ग विद्वेष न फैलायें

उनके और उनके आन्दोलनों के विकास में सवर्णों के योगदान को भी समझें

भावभरी श्रद्धाञ्जलि

देशरत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर भारत के उन महान व्यक्तित्वों की शृंखला के अंग हैं, जिन्होंने अपने जीवन से यह सिद्ध किया कि जीवन में महानता का सृजन-अर्जन करने के लिए किसी वर्ग या वर्ण विशेष में ही जन्म लेना जरूरी नहीं है। वशिष्ठ अप्सरा (वैश्या) पुत्र थे, वेदव्यास जी का जन्म धीवर कुल की कन्या के गर्भ से हुआ था। ऐतरेय उपनिषद् के प्रणेता ऐतरेय की माँ को उनके पिता का पता नहीं था। लेकिन उन सभी ने अपने जीवन में ब्राह्मणत्व का सृजन-अर्जन करने में सफलताएँ पाईं। संत रैदास से लेकर कबीर तक के इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति भी इसी गौरवमय धारा के महान साधक सिद्ध होते हैं।

भारतीय संस्कृति तो वर्णों को जन्म से नहीं, गुण-कर्म विभाग के अनुसार ही मानती है। गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है-''**चातुर्वण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः**।'' इसी आधार पर ऊपर वर्णित कथित निम्न कुलों में पैदा व्यक्तियों को ब्राह्मण कोटि का मान-सम्मान दिया गया। इस युग में बाबा साहब अम्बेडकर ने भी अपनी प्रतिभा से यह सिद्ध कर दिया कि भारतीय संस्कृति की गुण-कर्म विभाग वाली उक्ति आज भी सत्य है। उनके ऐसे सुगढ़ व्यक्तित्व का ही प्रभाव है कि सरकारें बदलती रहीं, किन्तु उनके सम्मान में कमी नहीं आयी। इसके लिए उन्हें सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर जो भी सम्मान मिले हैं या मिलते रहेंगे, उन्हें उनका विवेक सम्मत अधिकार ही माना जाएगा। ऐसे महान व्यक्तित्व को शत-शत नमन।

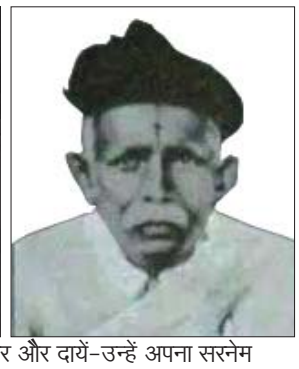
विनम्र निवेदन

डॉ. साहब ने सदैव अपने विचारों और व्यवहार से वर्ग विद्वेष के भ्रम में न पड़कर सामाजिक समरसता और सद्भाव बनाए रखने के प्रभावी प्रयास किए हैं। किन्तु उनके दलित आन्दोलन के सूत्रधार कुछ स्वनाम धन्य नेतागण उनके जीवन दर्शन के विपरीत वर्ग विद्वेष और दुर्भाव फैलाने के प्रयास करते रहते हैं। विशेष रूप से सवर्णों-ब्राह्मणों के प्रति पिछड़े वर्ग के व्यक्तियों में नफरत पैदा करने में अपने नेतृत्व की गरिमा समझते हैं। यह स्थिति दुःखद एवं शोचनीय है। उन्हें शायद यह पता नहीं कि डॉ. साहब और उनके आन्दोलन के विकास में सच्चे ब्राह्मणों और सवर्णों का कितना महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इस सम्बन्ध में प्रामाणिक पुस्तकों में प्रकाशित निम्न लिखित कुछ उदाहरण वास्तविकता को उजागर करते हैं।

पहला उदाहरण : उनके प्रचलित उपनाम (सरनेम) 'अम्बेडकर' के संदर्भ से ही समझें। पिछड़ी जातियों में से किसी में भी 'अम्बेडकर' उपनाम नहीं पाए जाते। उनके पिताजी का नाम श्रीराम जी मालोजी सकपाल था। अम्बेडकर वास्तव में महाराष्ट्रियन ब्राह्मणों के एक वर्ग के लिए प्रयुक्त सम्बोधन है। प्रश्न उठता है कि डॉ. भीमराव का सरनेम 'सकपाल' से अम्बेडकर कैसे हो गया? इसका प्रसंग संक्षेप में इस प्रकार है।

• सातारा (महाराष्ट्र) स्थित सरकारी मराठी माध्यमिक शाला में उनके एक ब्राह्मण शिक्षक थे श्रीकृष्णा जी केशव अम्बेडकर। वे बालक भीम की प्रतिभा देखकर उसे विशेष स्नेह करते थे। दोपहर की छुट्टी में भीम भोजन करने घर जाते थे तो लौटने में लेट हो जाया करते थे। इसलिए अम्बेडकर गुरुजी अपने टिफिन में अतिरिक्त भोजन ले आते थे। वे बालक भीम को अपने साथ भी रोटी-सब्जी खिलाते थे। उन्हींने ही अपने प्रिय भीम का नाम बदलकर उसमें अपना सरनेम जोड़कर उसे 'भीमराव अम्बेडकर' कर दिया था।





बाँये-डॉ. बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर और दायें-उन्हें अपना सरनेम (उपनाम) देने वाले उनके शिक्षक श्री कृष्णाजी केशव अंबेडकर

• इससे भी पहले की एक और घटना उसी शाला में उनके ब्राह्मण शिक्षक श्री पेंडशे गुरुजी की है। एक बार बाल भीम वर्षा में भीग गये। पेंडशे गुरुजी उसे अपने साथ घर ले गए। उनकी पत्नी ने अपने पुत्र के साथ भीम को भी गरम पानी से अपने हाथों से नहलाया था।

• डॉ. अम्बेडकर ने अपने जन्म के स्वर्ण जयंती समारोह (नरे पार्क, मुम्बई) में मंच से उक्त दोनों घटनाओं को अपने शालेय जीवन की प्रथम और द्वितीय मधुर स्मृति कहते हुए हर्ष और गौरव व्यक्त किया था। उनका अपने उक्त शिक्षकों के साथ स्नेह सम्बन्ध जीवन भर बना रहा। सन् 1934 में अम्बेडकर गुरुजी उनसे मिलने उनके घर (राजगृह, दादर, मुम्बई) पहुँचे तो उन्होंने उन्हें विधिवत दण्डवत प्रणाम करके दक्षिणा के रूप में श्रीफल सहित धोती एवं चादर भेंट की थी।

• मुम्बई के एलिफिस्टन हाईस्कूल में ब्राह्मण शिक्षक श्री नारायण मल्हावराय जोषी ने भी उनकी प्रतिभा को समझा और मान दिया। उन्हें पिछली बैंच से उठाकर आगे की बैंच पर बिठाया। समय-समय पर उन्हें ब्लैक बोर्ड पर लिखने का अवसर भी देते रहे।

• मैट्रिक पास होने के बाद उन्हें बड़ौदा के यशस्वी महाराज श्रीमंत सयाजीराव की ओर से छात्रवृत्ति दिलवाने की पहल करने वाले श्री यान्दे जी भी ब्राह्मण थे। यान्दे जी के प्रसिद्ध निर्णयसागर प्रेस में बड़ौदा राज्य का साहित्य प्रकाशित होता था। इसलिए यान्दे जी की सीधी पहुँच महाराज तक थी।

• दिनांक 4 जून 1913 के दिन बड़ौदा राज्य और भीमराव अम्बेडकर के बीच विदेश में उच्च शिक्षा हेतु शिष्यवृत्ति-आर्थिक सहायता सम्बन्धी दस्तावेज़ स्टाम्प पेपर पर लिखा गया। उक्त दस्तावेज़ लिखने वाले और उसमें श्री अम्बेडकर के पक्ष में साक्षी देकर हस्ताक्षर करने वाले दोनों सज्जन (श्री त्रिभोवन जे. व्यास तथा श्री ए.जी. जोषी) भी ब्राह्मण ही थे। इसी आधार पर शिक्षा पूरी करने के बाद डॉ. अम्बेडकर जी ने काफी साल तक बड़ौदा राज्य में अपनी सेवाएँ दी थीं।

• जब उन्होंने समाज के उपेक्षित वर्ग को न्याय दिलाने के लिए विभिन्न आन्दोलन किए, तब भी उन्हें अनेक प्रभावशाली ब्राह्मणों तथा उनके सवर्ण हिन्दू साथियों का भरपूर योगदान मिला। जैसे-

महाड सत्याग्रह अछूतों को समाज में उचित अधिकार दिलाने के लिए किया गया था। कोलाबा जिला बहिष्कृत परिषद के द्वारा आयोजित विशाल कार्यक्रम (19-20 मार्च 1924) के बाद डॉ. अम्बेडकर की अगवानी में एक विशाल रैली निकाली गई थी। रैली के समापन पर चावदार तालाब (अवर्णों के लिए प्रतिबन्धित) में प्रवेश करके पानी पिया गया था। इस योजना के प्रस्तावक श्री अनन्तराव विनायक चित्रे भी कायस्थ ब्राह्मण थे। उन्होंने बाद में डॉ. अम्बेडकर को उनके साप्ताहिक पत्र 'सामयिक जनता' में अपना सहयोग एडीटर के रूप में दिया।

• महाड सत्याग्रह के खिलाफ एक दीवानी मुकदमा (केस नम्बर 405/1927) दिनांक 20 मार्च 1927 को डाला गया था। उस केस में डॉ. अम्बेडकर के पक्ष में साक्षी (गवाह) के रूप में तत्कालीन शंकराचार्य कृतकोटि भी शामिल थे। वह केस दस वर्ष चला। दिनांक 17 मार्च 1937 के दिन उस मामले का फैसला डॉ. अम्बेडकर के पक्ष में देने वाले न्यायमूर्ति श्री वि.वि. पण्डित भी ब्राह्मण थे।

• दिसम्बर 1927 में अकोला में वेदान्त शास्त्र पारंगत श्री नारायण शास्त्री मराठे की अध्यक्षता में 'बृहद् महाराष्ट्र परिषद्' की बैठक डॉ. साहब द्वारा समर्थित 'सामाजिक समता आन्दोलन' के संदर्भ में हुई थी। उसमें सैकड़ों की संख्या में शास्त्रज्ञ विद्वान ब्राह्मणों ने भाग लिया था। सभा में एकमत से सामाजिक समता आन्दोलन का समर्थन किया गया। उसमें 13 से अधिक प्रस्ताव पारित करके घोषणा की गई थी कि 'अस्पृश्यता' शास्त्र सम्मत नहीं है। मानवमात्र को वेद के अध्ययन का अधिकार है। स्कूल, धर्मशाला, कुआँ, तालाबों, मंदिरों जैसे तमाम सामाजिक स्थलों में प्रवेश का अधिकार समाज के सभी वर्गों को है। डॉ. अम्बेडकर की सारी अपेक्षाओं का समर्थन इस ब्राह्मण परिषद् द्वारा किया गया था।

- सामाजिक समता आन्दोलन दलितों को भी वैदिक रीति से यज्ञोपवीत देने, सवर्णों और दलितों के सामूहिक सहभोज कराने जैसे कार्यक्रमों का संचालन करने के लिए प्रारम्भ किया गया था। उसके महत्त्वपूर्ण अग्रणियों में एक थे ब्राह्मण शिरोमणि लोकमान्य तिलक के सुपुत्र श्रीयुत् श्रीधर पंत। उन्होंने ब्राह्मणों की नगरी पुणे में गायकवाड़ सवर्णों के भारी विरोध के बीच दलित-सवर्णों का सामूहिक भोज कराया था। वे डॉ. साहब को अपना स्वजन मानते हुए अपने अंतरंग विचार भी उन्हें बताते रहते थे।

• श्री कमलकान्त (ब्राह्मण) सामाजिक समता संघ के बुनियादी सदस्य थे। वे सिद्धार्थ कॉलेज के संस्थापकों और उसे विकसित करने वालों में शामिल थे। साथ ही वे पीपुल्स एजुकेशन सोसाइटी के गवर्निंग बोर्ड के सदस्य भी थे। डॉ. बाबा साहब का पुनर्विवाह डॉ. शारदा कबीर के साथ हुआ था। रजिस्ट्रेशन कार्यालय में वधू के पक्ष से साक्षी में हस्ताक्षर करने वालों में वे (डॉ. चित्रे) तथा वधू के भाई वसंत कबीर (दोनों ब्राह्मण) थे।

• स्वतंत्र भारत के प्रथम केन्द्रीय मण्डल में उनके नाम को शामिल करने का आग्रह करने वाले श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य भी ब्राह्मण थे।

• डॉ. अम्बेडकर ने 1954 में भारतीय बौद्ध समाज नामक संस्था रजिस्टर्ड करवायी। इस संस्था के ट्रस्टियों में श्री बालकृष्ण कबीर (ब्राह्मण) भी थे।

• दिनांक 14 अक्टूबर 1954 (विजया दशमी) के दिन डॉ. अम्बेडकर बौद्ध धर्म में दीक्षित हुए थे। उसके रजिस्ट्रेशन में उनके वकील डॉ. अनन्त रामचंद्र कुलकर्णी और नागपुर के सेशन जज न्यायमूर्ति भवानी शंकर नियोगी भी ब्राह्मण थे।

उक्त उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है कि डॉक्टर अम्बेडकर कहीं भी ब्राह्मण या सवर्ण विरोधी नहीं रहे। महत्त्वपूर्ण, संवेदनशील प्रसंगों में उन्हें सवर्णों का सहयोग खुलकर मिलता रहा। और सम्बन्धों का निर्वाह अन्त तक हुआ।

यह बात सच है कि समाज में अतिवादी अहंकारी ब्राह्मणों-सवर्णों का एक ऐसा भी वर्ग है जो दूसरे वर्णों को हेय दृष्टि से देखता है। समाज रूपी विराट शरीर में ब्राह्मण की उपमा मुख से दी गई है। मुख यानी पूरा सिर। मुख जो खाता है, उसका लाभ शरीर के सभी अंगों को पोषण के रूप में समान रूप से मिलता है। शरीर में कहीं भी चोट लगे तो मुख से हाय और आँखों से आँसू स्वाभाविक रूप से निकलते हैं। उस चोटिल अंग को जल्दी से जल्दी कष्टमुक्त और स्वस्थ बनाने के लिए हर तत्परता बरती जाती है। इसी बात को संत तुलसीदास जी ने श्रीरामचरित मानस में इस प्रकार लिखा है-

मुखिया मुख सौ चाहिए, खान पान को एक।
पालइ, पोसइ सकल अंग, तुलसी सहित विवेक।।

सच्चे ब्राह्मणों को पूरे समाज को शुद्ध, पुष्ट, प्रगतिशील बनाने के लिए पूरी शक्ति से प्रयास करना चाहिए। जो ऐसा नहीं करते, वे भारतीय विचार दर्शन के अनुसार 'ब्राह्मण' कहे जाने योग्य नहीं होते। इसी तरह किसी भी वर्ण में पैदा व्यक्ति यदि उक्त योग्यता अर्जित करता है और उक्त श्रेष्ठ प्रयास करता है तो वह भी ब्राह्मण की संज्ञा में आता है।

इसीलिए पिछड़े वर्ग के लोगों का समान स्तर लाने के प्रयास करने वालों को चाहिए कि वे भटके हुए ब्राह्मणों को महत्त्व देकर वर्ग विद्वेष पैदा करने की जगह सज्जनों, सच्चे ब्राह्मणों के सहयोग से अपने अन्दर श्रेष्ठ ब्राह्मण के गुण विकसित करें।

इस दिशा में 'युग निर्माण योजना', गायत्री परिवार जैसे संगठनों ने सार्थक पहल कर भी दी है। देश के किसी भी वर्ग में पैदा व्यक्तियों को ब्राह्मणत्व, पौरोहित्य का प्रशिक्षण देकर पिछड़ों को आगे लाकर उनके विकास के सोपान रचे जा रहे हैं।

दलित आन्दोलन से जुड़े जो लोग वर्ग विद्वेष बढ़ाते हैं, वे प्रकारान्तर से बाबा साहब अम्बेडकर के आदर्शों और प्रयासों पर पानी फेरने जैसा अपराध करते हैं। जो स्वयं के और अपने प्रभाव क्षेत्र के व्यक्तियों का पिछड़ापन दूर करने के लिए तत्पर होंगे, वे बाबा साहब की आत्मा को तृप्त करेंगे। उन्हें भी बाबा साहब की तरह सज्जनों, सवर्णों, ब्राह्मणों का सराहनीय सहयोग मिलना निश्चित है। परमात्मा की योजना भी ऐसी ही है। अस्तु नादानी छोड़कर, समझदारी अपनाकर समाज को एकता, समता, शुचिता और प्रेम के सूत्र में बाँधा जाना उचित भी है और आवश्यक भी।

सच्चे मित्र उन्हीं को मिलते हैं, जो दूसरों के दुःख में दुःखी होते और हाथ बँटाते हैं।

शान्तिकुञ्ज द्वारा मुख्यमंत्री राहत कोश में एक करोड़ रुपये का अनुदान

कोरोना संकट के निवारण हेतु गायत्री परिवार का अग्रणी योगदान

श्रद्धेय डॉ. प्रणव जी ने उत्तराखण्ड के मंत्री श्री मदन कौशिक को भेंट किया चेक

कोरोना वायरस से उत्पन्न संकट से निपटने के लिए प्रशासन द्वारा किए जा रहे अथक प्रयासों में सहयोग करते हुए श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने दिनांक 27 मार्च को मुख्यमंत्री राहत कोश में एक करोड़ रुपये का अनुदान दिया। अखिल विश्व गायत्री परिवार की ओर से इस अनुदान को ग्रहण करने मुख्यमंत्री के विशेष प्रतिनिधि प्रदेश के शहरी विकास मंत्री माननीय श्री मदन कौशिक शान्तिकुञ्ज पधारे थे।

शांतिकुंज आपदा प्रबंधन दल की ओर से गरीब व जरूरतमंद लोगों के लिए भोजन सेवाएँ प्रदान करने का आश्वासन भी प्रशासन को दिया गया।



चेक ग्रहण करते शहरी विकास मंत्री श्री मदन कौशिक

हम सेवा के लिए सदैव तत्पर हैं

– श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

श्रद्धेय डॉ. साहब ने श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट की ओर से अनुदान देते हुए कहा कि परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी की करुणा और संवेदनाओं से सिंचित यह अखिल विश्व गायत्री परिवार सारे विश्व के मंगल और उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रयत्नशील रहा है। इस परिवार के करोड़ों लोग व्यथित-पीड़ित मानवता के सहयोग के लिए तत्पर हैं। आज मानवता पर आए भयानक संकट का हम सब मिलकर पूरी निष्ठा और तत्परता के साथ मुकाबला करेंगे। गायत्री परिवार इसके निवारण के लिए सर्वसमर्थ सत्ता से विशेष प्रार्थना और यज्ञ-अनुष्ठान भी कर रहा है।

प्रशासन से पहले पहुँचते देखा है

– श्री मदन कौशिक, मंत्री उत्तराखण्ड

माननीय श्री मदन कौशिक जी ने इस अवसर पर गायत्री परिवार की सेवाओं का भावभरे अंतःकरण से स्मरण करते हुए आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि प्रदेश की हर आपदा में गायत्री परिवार प्रशासन से पहले जाकर जरूरतमंदों की सेवा-सहयोग करता दिखाई देता है। उन्होंने वर्ष 2013 की केदारनाथ बाढ़, 2010 की आपदा, 1991 के भूकम्प के समय शान्तिकुञ्ज की सेवाओं को याद किया।

संकट की इस घड़ी में उभरी स्वजनों की संवेदना

सेवा-सहयोग में कोई पीछे न रहे


शैल जीजी

इन दिनों अपने परिजनों और शान्तिकुञ्ज के समक्ष राष्ट्रधर्म निभाने की दोहरी चुनौतियाँ हैं। वैश्विक आपदा की इस घड़ी में शान्तिकुञ्ज को देश-विदेश में रह रहे अपने सभी स्वजनों-परिजनों की चिन्ता है। शान्तिकुञ्ज के अंतःवासियों ने इस नवरात्र पर्व की साधना को उनकी सुरक्षा और संरक्षण के लिए समर्पित किया है। परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी की सूक्ष्म सत्ता सभी को संरक्षण प्रदान करे, स्वस्थ रखे और इस महामारी से बचाये रखे, यही हमारी प्रार्थना है।

प्रसन्नता की बात है कि इस समय में आवश्यक सावधानी और अनुशासन का पालन करते हुए पीड़ित मानवता की सेवा के लिए जो कुछ किया जा सकता है, हमारे परिजन कर रहे हैं। शान्तिकुञ्ज से भी उन्हें इस कार्य के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया जा रहा है। सेवा, सहयोग के यह समाचार जानकर अति प्रसन्नता होती है। शान्तिकुञ्ज ने भी **आप सबकी ओर से** इस सेवाकार्य में सहयोग प्रदान करते हुए उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री राहत कोश में **एक करोड़ रुपयों का अनुदान दिया है।**

निःसंदेह मानवता के उत्कर्ष के लिए ब्राह्मणोचित परम्पराओं का निर्वाह करने वाले अपने मिशन के लिए यह राशि छोटी नहीं है, लेकिन अपने आत्मीय परिजनों पर हमें पूरा विश्वास है कि उन सबके छोटे-छोटे अनुदान-अंशदान गुरुसत्ता की प्रेरणा से उभरे इस संकल्प को अवश्य ही पूरा कर देंगे। पूरा ही नहीं करेंगे, वह सामर्थ्य भी प्रदान करेंगे कि आगे भी आपदा की घड़ियों में सहयोग के लिए शान्तिकुञ्ज के हाथ बढ़ते ही रहें।

यह आप सबके छोटे-छोटे अंशदानों से संचित वह अमृत है जो अपने सद्भाव और संस्कारों के प्रभाव से पीड़ित समाज पर अमृत का अभिसिंचन करेगा, मानवता पर आया यह कष्ट शीघ्र ही दूर होगा।

स्वजनों की सेवा, संवेदना, सद्भावना के लिए आभार

आपदा की इस घड़ी में स्वजनों ने अपने गुरुद्वारे के प्रति भी जो संवेदना व्यक्त की है, उससे हमारा अंतःकरण भावविभोर है। निःसंदेह शान्तिकुञ्ज की सभी गतिविधियाँ बंद होने से आर्थिक कठिनाई तो बढ़ी है। शान्तिकुञ्ज और देव संस्कृति विश्वविद्यालय की विशालकाय व्यवस्थाओं में, कार्यकर्त्ताओं के निर्वाह में लाखों रुपये का खर्च प्रतिदिन होता है। ऐसे में यहाँ आने वालों का सिलसिला रुक जाने से चिन्ताएँ तो बढ़ी ही हैं। लेकिन गुरुसत्ता पर पूरा-पूरा विश्वास है कि वह अपने बच्चों को इतना समर्थ अवश्य बनाएगी कि यहाँ न आने पर भी वे अपने गुरुद्वारा का ध्यान रख सकें।

अपना और अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। बस इतना ही कहना है कि यह परीक्षा की घड़ियाँ हैं। सेवा-सहयोग में कोई भी परिजन पीछे न रहे। अपनी कुशलता के समाचारों से भी अवगत कराते रहें।

आप अपना अनुदान शान्तिकुञ्ज के निम्न खातों में **ऑनलाइन** जमा करा सकते हैं।

खाते का नाम - श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट-हरिद्वार

Bank	Account Number		IFSC code
AXIS	1560 101 000 13846	(15 DIGIT)	UTIB0000156
BOB	0926 010 000 4639	(14 DIGIT)	BARBOHARDWA
CBI	1577 841 575	(10 DIGIT)	CBIN0280274
HDFC	0943 145 000 0157	(14 DIGIT)	HDFC0000943
ICICI	0239 010 000 10	(12 DIGIT)	ICIC0000239
PNB	3129 010 100 000018	(16 DIGIT)	PUNB0469400
SBI	1087 685 8311	(11 DIGIT)	SBIN0002350

Email: donation@awgp.org Fax: (01331)260866 Pan No: AAATV 1261 C

https://www.awgp.org/contribute/online_donation

लॉक डाउन की स्थिति में शान्तिकुञ्ज की सेवा-सक्रियता

हरिद्वार के अलग-अलग ज़ोनों में सक्रिय हैं आपदा प्रबंधन प्रकोष्ठ के पाँच दल

शान्तिकुञ्ज आपदा की हर घड़ी में अविलम्ब सक्रिय हुआ है। कोरोना वायरस से उपजे संकट के समय भी श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी ने आपदा प्रबन्धन दल को आवश्यक दिशा-निर्देश देकर अविलम्ब सक्रिय किया। सर्वप्रथम सोशल डिस्टेंसिंग (परस्पर दूरी) बनाये रखने के लिए व्यवस्था बनाने और फिर जरूरतमंद भिक्षाजीवी संत, मजदूर, फँसे हुए सैलानी, पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी आदि तक भोजन के पैकेट्स पहुँचाने का कार्य जोरशोर से चल रहा है। आपदा प्रबंधन प्रकोष्ठ प्रभारी श्री राकेश जायसवाल प्रशासन से तालमेल बनाए रखने में अहम भूमिका निभा रहे हैं।

सोशल डिस्टेंसिंग की व्यवस्था

सैकड़ों दुकानों के सामने गोले बनाए

शान्तिकुञ्ज के आपदा प्रबन्धन प्रकोष्ठ ने लॉक डाउन को सफल बनाने में प्रशासन का भरपूर सहयोग किया। प्रमुख आवासीय क्षेत्र ज्वालापुर, कनखल आदि में शान्तिकुञ्ज के कार्यकर्त्ता पहुँचे और वहाँ दुकानों के सामने ग्राहकों के बीच सुरक्षित अंतर बनाए रखने के लिए गोले बनाए। इसके साथ लोगों से सुरक्षा, सावधानी, स्वच्छता आदि बनाए रखने की अपील भी की जाती रही। पहले तीन दिनों में ज्वालापुर की सब्ज़ी मण्डी तथा किराना, दूध, दवाई इत्यादि की सैकड़ों दुकानों के सामने चूने के गोल घेरे बनाए, ताकि लोग इन गोलों में खड़े होकर सुरक्षित अंतर रखते हुए पंक्तिबद्ध होकर अपनी बारी की प्रतीक्षा कर सकें।


दुकानों के सामने गोले बनाते शान्तिकुञ्ज के कार्यकर्त्ता

प्रतिदिन बाँटे जा रहे हैं भोजन के हज़ारों पैकेट्स

आपदा प्रबन्ध दल का दूसरा बड़ा काम है प्रतिदिन हज़ारों जरूरतमंदों तक भोजन पहुँचाना। यह कार्य वैसे तो लॉक डाउन के पहले दिन से ही चल रहा था, लेकिन 29 मार्च से इसे बृहद् स्तर पर चलाया जाने लगा। पहले दिन 1500 भोजन पैकेट्स बाँटे गए और दूसरे दिन 30 मार्च को 3000। यह व्यवस्थाएँ इस प्रकार बनाई जा रही हैं।

पाँच क्षेत्र-पाँच दल

• पाँचों ज़ोन के लिए पाँच टोलियाँ गठित की गई हैं। प्रत्येक में चार-पाँच सदस्य हैं। आशीष कुमार कनखल व सिंहद्वार क्षेत्र में, राकेश जायसवाल व महेश राठौर हरिपुर कलाँ व सप्तसरोवर क्षेत्र में, डॉ. सत्यनारायण खड़खडी क्षेत्र में, राहुल कुमार ज्वालापुर क्षेत्र में तथा अमित सरकार शिवलोक एवं बीएचईएल क्षेत्र में टोलियों का नेतृत्व कर रहे हैं। क्षेत्रीय सर्वेक्षण के आधार पर निर्धारित संख्या में प्रतिदिन शान्तिकुञ्ज के भोजनालय में भोजन पैकेट्स तैयार कर सम्बद्ध क्षेत्रों में भेजे जा रहे हैं।

घर-घर बन रही हैं रोटियाँ

• भोजन बनाते समय ज्यादा भीड़ न हो, इसके लिए शान्तिकुञ्ज की कार्यकर्त्ता बहिनों से अपने-अपने घर से ही 25-25 रोटियाँ बनाकर लाने के लिए कहा गया है।





क्षेत्रीय व्यवस्था भी

• ज्वालापुर क्षेत्र के कार्यकर्त्ताओं को 1000 लोगों के लिए राशन दिया गया है, ताकि वे वहीं भोजन तैयार कराकर अपने क्षेत्र में बाँट सकें।

• विभिन्न क्षेत्र के भोजन बनाकर देने के इच्छुक कार्यकर्त्ताओं को भोजन किट दिए गए हैं, जिससे काम बँट जाए और अधिक लोगों की सेवा हो सके।

मध्य प्रदेश में सेवा का जबरदस्त उत्साह

शक्तिपीठ, **सागर** द्वारा 25000 रुपये के मास्क बनाकर वितरण करने का निर्णय लिया गया है।

होशंगाबाद शाखा द्वारा प्रतिदिन 100 पैकेट कच्ची खिचड़ी वितरित करने का कार्य आरंभ कर दिया गया है।

गायत्री शक्तिपीठ **छतरपुर** के 25 परिजन प्रतिदिन प्रातः 9 से 11 बजे तक प्रशासन के सहयोग के लिए तत्पर हैं।

गायत्री ज्ञान मंदिर पिण्टो पार्क **ग्वालियर** एवं लबानिया परिवार प्रशासन के सहयोग से प्रतिदिन 1000-1000 पैकेट भोजन सुबह-शाम वितरित कर रहा है।

जबलपुर शाखा प्रशासन के सहयोग से


भोजन वितरित करते जबलपुर के परिजन

बड़ी मात्रा में जरूरतमंदों तक भोजन पैकेट पहुँचा रही है।

दतिया में शैलेन्द्र यादव एवं साथियों द्वारा 300 पैकेट भोजन बँटवाया जा रहा है।

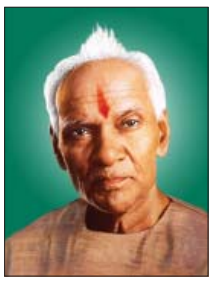
गुलाना, शाजापुर में जितेन्द्र बैरागी एवं पवन हवाड़ीया राशन एवं दवाओं का वितरण कर रहे हैं।

कोविड 19 संकट के विशेष संदर्भ में

हम आपको ऊँचा उठाएँगे और सारे संसार को शानदार बनाएँगे

परम पूज्य गुरुदेव द्वारा 1986 में दिए अपने एक उद्‌बोधन के चुने हुए अंश

अनहोनी अनायास नहीं है



इस समय की परिस्थितियाँ, जिनमें आप इन दिनों हैं, ये अगले दिनों रहेंगी नहीं। देख लेना आप तो जिंदा रहेंगे। जिंदा तो हमको भी रहना है, स्थूल शरीर से नहीं रहेंगे तो सूक्ष्म शरीर से हम बराबर लड़ाई के मोर्चे पर हम बराबर काम करते रहेंगे और आपके साथ-साथ रहेंगे।

इस समय में सारी दुनिया पर बड़ी मुसीबतें आयेंगी। और मुसीबतों से आप भी बच नहीं सकेंगे। चारों दिशाओं में जब आँधियाँ आती हैं, तूफान आते हैं, बरसात आती है तब कोई आदमी सुरक्षित नहीं रह सकता। प्रकृति हमसे नाराज हो गयी है और नाराज होने की वजह से कोई ना कोई काम ऐसा खड़ा कर देती है जिससे कि हमारे खाने-पीने तक पर मुसीबत आ जाती है। नेचर बहुत नाराज हो गयी है। ठंडक के दिनों में गर्मी, गर्मी के दिनों में ठंडक, बरसात के दिनों में कुछ।

बीमारियाँ फैलती हैं तो ऐसी फैलती हैं कि डॉक्टर लोग कहते हैं हमने तो इनका नाम भी नहीं सुना, कभी देखा नहीं। हमारी किसी किताब में पढ़ाया ही नहीं गया। हम क्या सुई लगायें, क्या दवा दें, पता तो है नहीं, ऐसा मरीज कोई देखा नहीं। ऐसी बीमारियों पर बीमारियाँ चली आ रही हैं।

आधी शक्ति बच्चों के लिए

ऐसे खराब वक्त में हमको चिंता दो लोगों की है। एक तो गायत्री परिवार के हमारे बच्चे। हमको बाहर का भी ख्याल है और बच्चों का भी ख्याल है। दो हिस्सों में हमने अपनी शक्ति को बाँट दिया है। पचास प्रतिशत शक्ति से हमने बाल-बच्चों की रक्षा करने के लिये, उनकी दुःख-मुसीबतों को दूर करने के लिये रखी है और पचास प्रतिशत हमने सारे संसार भर में जो दुःख और जो कष्ट आने वाले हैं, दुनिया में जो तबाही पैदा होने वाली है, उसके लिये सुरक्षित रखी है।

हमारे दो हिस्से हो गये हैं, अब। चौबीस लाख इंसान हमारे कुटुम्बी हैं और पाँच सौ करोड़ जो बाकी मनुष्य जाति रह जाती है वो कौन है आपके? वो कुटुम्बी नहीं है हमारी लेकिन हमारी संबंधी है, रिश्तेदार है, पड़ोसी है, मित्र है। वो सारी मनुष्य जाति हमारी जीवात्मा के समान ही सब मालूम पड़ते हैं।

विषमता मिटेगी एक विश्व परिवार बनेगा

विद्वान नहीं हैं हम, हम तपस्वी हैं। जबसे हमने जन्म धारण किया है, तब से लेकर के और इस समय तक एक तपस्वी का जीवन व्यतीत किया है। इसीलिये तपस्वी के पास जो शक्ति होनी चाहिये, वो हमारे पास है।

ये दुनिया बड़ी तहस-नहस हो रही है। इसको हम एक धुरी पर इकठ्ठी करेंगे। अनेक राज्यों (देश) का एक चक्रवर्ती राज्य बनायेंगे। एक धर्म सारी दुनिया का होगा और एक मेनेजमेंट, एक व्यवस्था दुनिया में होगी। ऐसी व्यवस्था होगी कि कोई आदमी छोटा-बड़ा नहीं होगा। समानता के अधिकार हरेक को मिलेंगे। विषमता लोगों के बीच में रहेगी नहीं। और सब आदमी कुटुम्बी होकर के रहेंगे। हमने अपने जीवन में परिवार बनाये हैं, आगे भी हम विश्व को एक परिवार के रूप में बनाने के लिये तैयारी करने जा रहे हैं।

विनाश-विकास साथ-साथ

दुनिया को हम शानदार बनायेंगे। लड़ोगे? पहले हम लड़ेंगे। नींव खोदनी पड़ती है, और उसके बाद महल बनाया जाता है। नींव खोदने में एक बड़ा संघर्ष होने वाला है। इस समय जो लोग है उनसे हम कहें, जैसे अभी आपके सामने कह रहे हैं तो कोई मान जायेगा क्या? तो फिर क्या करना पड़ेगा? जो जिस भाषा को समझता है उसको उसी भाषा में समझाना पड़ेगा। जो सिवाय शक्ति के और कोई बात नहीं समझते, जो धमकी के अलावा, ताकत के अलावा और कोई भाषा नहीं समझते उनको हम ताकत से भी समझायेंगे। जो भलमनसाहत से समझ सकेगा उसको भलमनसाहत से भी समझा देंगे।

ये कितना बड़ा काम है। सारे विश्व में फैले हुए राज्यों का (देशों का) एकीकरण करना है। कुटुम्ब एक मेनेजमेंट होता है और उसमें जो कमाई होती है उसमें सबका हिस्सा होता है। ऐसी बड़ी शानदार दुनिया का ख्वाब हमारे जेहन में है। तोड़ने का जमाना है? तोड़ने की भी बड़ी हिम्मत है, हममें। हमारे अंदर एक ऐसा बैठा है कि जहाँ-जहाँ भ्रष्टाचार दीख रहा है, अनीति, अत्याचार, अवाँछनीयता दीख रही है, खौफनाक कत्लेआम दिख रहे-उस सबसे लड़ने के लिये हमारे भीतर का एक सूरमा। आप कौन हैं-सूरमा हमको कह दीजिये। बनाना भी है हमको, तोड़ना भी हमको है।

धन की अहमियत रहेगी नहीं

हम आपकी रखवाली भी करेंगे और ऊँचा भी उठायेंगे। आपको दुःखी हम नहीं रहने देंगे। आपको कठिनाईयों में घिरा हुआ हम नहीं रहने देंगे। आपको हम ऊँचा उठायेंगे सभी दृष्टि से। पैसे की दृष्टि से? बेटा अगले दिन ऐसे आयेंगे कोई सोने की सलाखें घर में जमा करेगा नहीं। अभी भी छापे मारे जा रहे हैं और उस जमाने में तो कोई ऐसा छापा मारेगा कि जमीन में गढ़ा हुआ निकाल के ले जायेगा। उस जमाने में तो पैसा रहेगा ही नहीं उसको हम क्या देंगे। मालदार नहीं बनाओगे? नहीं, मालदार नहीं बनायेंगे। आपको हम भावनाशील बनायेंगे। आपको हम विचारशील बनायेंगे। आपको हम महामानव बनायेंगे। आपको हम ऋषिकल्प बनायेंगे। आपको हम देवता बनायेंगे। आपको बनाने की बहुत इच्छा है। और केवल आपको ही नहीं सारे संसार को। सारे संसार को शानदार बनायेंगे। ऊँचा उठा हुआ बनायेंगे, समुन्नत बनायेंगे, सुखी बनायेंगे और इस तरह का बनायेंगे जिस तरह का स्वर्ग। धरती पर स्वर्ग दिखे। और इंसानों को ऐसा बनायेंगे, जो शकल की दृष्टि से तो इंसान हों लेकिन वो इंसान न हों, देवता हों। देवता उनके भीतर से निकल रहा हो। देवता उनके भीतर से फैल रहा हो। देवता उनके भीतर काम कर रहा हो। अगली हमारी यही योजना है।



सोशल मीडिया में चर्चा में है

संत रविदास जी की पोथी

पोथी में लिखा है-

चीन अरब की धुरी बनेगी।
सभी तरफ संगीन लड़ाई।
इटली में कोहराम मचेगा।
युद्ध तीसरा प्रलयंकारी।
भारत होगा विश्व विजेता।

भारत में अवतारी होगा।
जो अति विस्मयकारी होगा।
ज्ञानी और विज्ञानी होगा।
वो अद्‌भुत सेनानी होगा।

देश बचाने के लिए होगा
एक आह्वान।
युग परिवर्तन के लिए,
चले प्रबल तूफान।

सभी तरफ कोहराम मचेगा।
कैसे हिन्दुस्तान बचेगा।।
नेता, मंत्री और अधिकारी।
जान बचाना होगा भारी।।
छोड़ सब मैदान भागेंगे।
सब अपने घर दुबकेंगे।।

हम क्या चाहते हैं

एकान्त सेवन के 21 दिन

या

अगर किसी को कोरोना के लक्षण दिखते हैं तो -

- उसे अकेले अस्पताल ले जाया जाता है।
- पृथक एकान्त वॉर्ड में रखा जाता है।
- किसी को मिलने नहीं दिया जाता।
- ठीक होने पर ही वह घर लौटता है।
- ठीक नहीं हुआ तो उसे घर वाले कभी नहीं देख पाते।
- मरने पर अंतिम संस्कार अस्पताल ही करवाते हैं।
- घर पर तो सिर्फ आती है मौत की सूचना।
- न अंतिम दर्शन, न अंतिम विदाई।

कुछ सकारात्मक बदलाव भी हुए हैं

कोरोना वायरस से उत्पन्न संकट से पूरी दुनिया में भारी तबाही मची है। लेकिन इसके कुछ सकारात्मक तथ्य भी हैं। जैसे -

1. वाहनों का आवागमन बन्द हो जाने से लाखों लीटर डीज़ल/पेट्रोल की बचत हुई।
2. प्रदूषण और धुँए के बादलों को अस्थाई ही सही, कुछ विराम मिला। स्वच्छ, नीले आकाश के दर्शन हो सके।
3. निरंतर बीमार होती जा रही प्रकृति को स्वस्थ होने के लिए वह अवकाश मिला, जिसकी उसे नितांत आवश्यकता थी।
4. हमें भागदौड़ भरी जिंदगी में आराम करने का अवसर मिला। हम कुछ घंटे चैन से अधिक सो सके और अगली सुबह बिना किसी काम के चिंता व तनाव के उठ सके। हमें सुबह के घड़ी के अलार्म के छोटे-से आतंक से मुक्ति मिली।
5. दिनभर की अवाञ्छित तनावजन्य ध्वनियों की जगह पक्षियों के कलरव, झूमते पेड़-पत्तियों की मधुर आवाज़ ने ले ली।

बड़ी गहरी हैं हमारे ज्ञान-विज्ञान की जड़ें

हमारे ज्ञान-विज्ञान की जड़ें कितनी गहरी हैं, यह एक पंचांग में प्रकाशित संवत् 2076 के विश्व तथा भारत के फल को पढ़ने के बाद समझा जा सकता है। इसमें लिखा है- धार्मिक हिंसा तथा युद्ध जनित परिस्थितियाँ होंगी। धार्मिक विषयों पर तीव्र मतभेद होगा। विश्व में बौद्धिक व शिक्षा सुधार पर विचार विमर्श होगा। विश्व के शेयर बाजारों में अनिश्चितता का वातावरण रहेगा। किसी विषाणु जनित महामारी का प्रकोप होगा। विश्व बेरोज़गारी में वृद्धि होगी। **उपरोक्त सभी तथ्य आज चरितार्थ हो रहे हैं।**

सक्रिय हो गई हैं आपदा निवारण युवा वाहिनियाँ

सेवा गायत्री परिवार का स्वभाव बन गया है। आपदा की कोई भी घड़ी हो, गायत्री परिवार सेवाकार्य में अग्रणी रहा है। कोरोना वायरस संकट की इस घड़ी में भी सारी सावधानियाँ, नियम-अनुशासनों का पालन करते हुए गायत्री परिवार के परिजन जो कुछ कर सकते हैं, करने के लिए उत्साहित हैं और लॉक डाउन के आरंभ से ही सेवाकार्य आरंभ भी कर दिए हैं।

शान्तिकुञ्ज एवं प्रान्तीय संगठनों ने देशभर में ऐसे सेवाभावी लोगों को प्रोत्साहित करने और आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए एक सुव्यवस्थित तंत्र विकसित करना आरंभ कर दिया है। फोन या वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से ही जगह-जगह आपदा निवारण वाहिनियों का निर्माण किया जा रहा है। उन्हें कार्य करने के तौर-तरीके बताये जा रहे हैं। इनका कार्य है-

- भोजन के पैकेट्स तैयार करना।
- जरूरतमंदों तक भोजन के पैकेट्स पहुँचाना।
- जरूरतमंदों तक सूखा राशन पहुँचाना।
- मास्क वितरित करना।
- लोगों को स्वच्छता के तौर-तरीके सिखाना।
- परस्पर दूरी बनाए रखने की व्यवस्था बनाना।
- समाज में जागरूकता फैलाना।
- प्रशासन की आवश्यकतानुसार सहयोग करना।

समाचार मिलने तक पचास से अधिक शाखाओं ने इस प्रकार की वाहिनियाँ गठित कर ली थीं। इस संदर्भ में परिजन युवा प्रकोष्ठ, शान्तिकुञ्ज से मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं।





ऊपर- ओरछा, जिला टीकमगढ़ (म.प्र.) भोजन पैकेट्स तैयार करते और उन्हें जरूरतमंदों तक पहुँचाते गायत्री चेतना केन्द्र के परिजन। **पहले दिन उन्होंने 200 मजदूरों में भोजन पैकेट बाँटे।**

भूख मिटाने, राशन और भोजन बाँटने के लिए निकल पड़े परिजन

गुरुग्राम। हरियाणा

ग्रुरुग्राम शाखा ने 26 मार्च के दिन 210 परिवारों को राशन के सेट प्रदान किए। प्रत्येक परिवार को 5 किलो आटा, एक लीटर सरसों का तेल, एक पैकेट नमक और एक डिटॉल साबुन दिया गया। लाभार्थियों में 170 परिवार दिल्ली के, 30 परिवार गुरुग्राम के और 10 परिवार सेक्टर 83 की झुग्गी बस्ती के थे।

नोएडा। उत्तर प्रदेश

दिया, नोएडा के युवाओं ने लॉक डाउन के दिनों में फूड पैकेट बाँटने की सेवाएँ पहले दिन से ही आरंभ कर दी हैं। इस कार्य में गाात्री चेतना केन्द्र, नोएडा भी प्रमुख योगदान है।

लखीमपुर खीरी। उत्तर प्रदेश

अनेक मजदूर और असहाय लोग मध्य रात्रि को पैदल ही लखनऊ से लखीमपुर की ओर चले आ रहे थे। माता भगवती भोजन प्रसाद सेवा की टीम ने उनकी भूख, प्यास और थकान का अनुभव किया तो घर में उपलब्ध सूखा भोजन, बिस्किट, फल आदि लेकर उनकी सेवा के लिए निकल पड़े। सैकड़ों लोगों को स्वल्पाहार कराया। अगले दिन से वे



लखीमपुर में मध्य रात्रि में सेवा करते युवा



सुलतानपुर में भोजन बाँटते युवा

बड़े पैमाने पर सेवाकार्यों में लग गए।

सुलतानपुर। उत्तर प्रदेश

सुलतानपुर शाखा ने परस्पर दूरी बनाए रखने और स्वच्छता के सभी मानकों का ध्यान रखते हुए अस्पताल में दूर-दूर से आ रहे मरीजों की सेवा करने और लावारिस जानवरों की सेवा करने का बीड़ा उठाया है।